कविशेखर बदरीनाथ झाक साहित्यिक परिचय

संस्कृत-साहित्य-शास्त्रक प्रगाढ़ विद्वान् एवं सफल शिक्षक, अनेकानेक संस्कृत-साहित्य-पुस्तकक प्रणेता आ' सुप्रसिद्ध पण्डित कवि स्व० बदरीनाथ झाकेँ हुनक विलक्षण कवित्व-प्रतिभाक कारणेँ 'कविशेखर'क उपाधि सँ विभूषित कयल गेल छलनि। हिनका स्व० रमानाथ झा मैथिली साहित्यक 'माघ' सेहो कहने छथिन। संस्कृत मे कहल गेल छैक जे –

"नैषधे पदलालित्यम्, भारवैरर्थं गौरवम्।
उपमा कालिदासस्य, माघे सन्तित्रयोगुणा॥"

अर्थात् संस्कृत-साहित्यमे पद लालित्यक दृष्टिकोणसँ नैषधकेँ सर्वोत्कृष्ट स्थान छनि, अर्थ-गौरवक दृष्टिसँ भारवि कवि सर्वोत्तम मानल जाइत छथि, उपमाक विचारसँ कवि-कुल-गुरु कालिदासक स्थान सर्व-श्रेष्ठ छनि मुदा महाकविक 'माघ'क रचनामे उपयुर्क्त तीनू वैशिष्ट्य (पद लालित्य, अर्थ-गौरव एवं उपमा) क समन्वय अछि। तहिना स्व० कविशेखर बदरीनाथ झाक काव्यमे उपयुर्क्त तीनू गुणक समन्वय पबैत छी। एकरा दोसर शब्दे एना कहल जा सकैछ जे संस्कृत-साहित्यमे जे काव्यक चरम उत्कर्ष महाकाव्यमे भेटैत अछि, ताहि उत्कर्षकेँ ई अपना भाषामे चित्रित कऽ मैथिली साहित्यक एवं बड़ पैघ अभावक पूर्ति कयल तेँ हिनका मैथिली साहित्यक 'माघ' कहल गेलनि।

(क) **जीवन-काल एवं वृत्ति**—हिनक जन्म १८९३ ई० मे मधुबनी जिलाक सरिसवपाही नामक गाममे एक समुन्नत श्रोतिय कुलमे भेल छलनि। प्रथमतः ई मुजफ्फरपुर धर्मसमाज संस्कृत कॉलेजमे

अध्यापक छलाह, ओहीठामसँ साहित्य-सर्जना दिस उन्मुख भेलाह। सरस्वतीक प्रसादपर हिनका वंशक जन्मजात अधिकार छलनि। तेँ कविशेखरजी संस्कृतक संग-संग मैथिली साहित्यमे सेहो अपन प्रतिभाक चमत्कार देखौलनि। आ' जीवन पर्यन्त जाहि उत्साहक संग ई साहित्य-सेवामे लागल रहलाह से सर्वथा अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय कहल जा सकैत अछि। जहिना ई संस्कृत साहित्यमे लब्ध-प्रतिष्ठित विद्वान् मानल जाइत रहलाह तहिना मैथिली साहित्यमे सेहो हिनक महत्त्वपूर्ण स्थान रहलनि। हिनक मृत्यु १९७४ ई० मे काशीमे भऽ गेलनि।

(ख) रचना—कविशेखरजी संस्कृत एवं मैथिली भाषाक विशिष्ट विद्वान् छलाह, तेँ दुनू साहित्यकेँ अपन असाधारण कवित्व-प्रतिभा एवं पाण्डित्यसँ समृद्ध कयलनि। संस्कृत साहित्यमे हिनक तीन प्रकारक रचना छनि, जाहि सभक विवेचन कयलासँ हिनक विलक्षण पाण्डित्यक परिचय भेटैत अछि। हिनक किछु मौलिक ग्रन्थ छनि, तँ किछु टीका ग्रन्थ एवं किछु सम्पादित ग्रन्थ सेहो छनि।

मौलिक ग्रन्थमे प्रमोदलहरी, भागवतप्रदीप, राधापरिणय महाकाव्य (जकर संस्कृत साहित्य मध्य विशिष्टतम स्थान अछि), साहित्य-मीमांसा आदि अबैत छनि तँ टीका-ग्रन्थ मध्य रसमञ्जरी सुरभिः, रस गंगाधर चन्द्रिका एवं ध्वन्यालोक दीधितः छनि जे तीनू उत्कृष्ट एवं बहुप्रशंसित छनि एवं सम्पादित ग्रन्थमे यदुनाथ प्रणति व्यञ्जनावादः, रत्नपाणि विरचितैकोद्दिष्टसारिणी, भानुदत्तविरचित रसपारिजात, इत्यादि ग्रन्थ अबैत छनि।

ओना मैथिलीक परम उपासक आ' सेवक रहितहुँ एकर अधिक मात्रामे सेवा नहि कऽ सकलाह मुदा हिनका मैथिलीक एकमात्र मौलिक कृति 'एकावली परिणय' महाकाव्यक कारणे (जे कि मैथिलीक पहिल प्रकाशित महाकाव्य अछि) मैथिली साहित्यमे महत्त्वपूर्ण स्थान छनि। एकर वैशिष्ट्य तँ मैथिली महाकाव्यक क्षेत्रमे एहन अद्वितीय अछि, जकरा दऽ कहल जाइछ जे जावत धरि मिथिलाक आर्य संस्कृति वर्त्तमान रहत एवं जावत धरि मैथिली भाषामे सजीवता रहत तावत धरि एहि महाकाव्यक सौरभ सेहो वातावरणकेँ आमोदित करैत रहत। एकर अतिरिक्त हिनक मैथिलीमे अन्य कृति अछि 'मैथिली गीत रत्नावली' जाहिमे विद्यापति सँ लऽ कऽ आधुनिक काल धरिक अनेक कविक ११५ गीत संकलित अछि। संगहि 'मैथिली पद्यमाला' नामक एक हजार पदक पुस्तक सेहो सम्पादित कयने छलाह।

(ग) काव्य-प्रतिभा—कविशेखरजीक बहुमुखी प्रतिभाक परिचय हुनक विविध विषयक रचनेसँ नीक जकाँ प्राप्त भऽ सकैत अछि। हिनक रचना-समूहसँ स्पष्ट होइत अछि जे हिनकामे जन्मजात प्रतिभा छलनि। कवित्व-प्रतिमा एक एहन असाधारण वस्तु थीक जकरा बलपर अल्पो रचनाक अछैतो उच्चतम स्थान प्राप्त कयल जा सकैत अछि। ओना तँ कविशेखरजीक मैथिलीमे रचना थोड़ छनि मुदा ओही अल्प-संख्यक रचनाकेँ बलपर ओ महाकविक पंक्तिमे स्थान रखैत छथि। हिनक 'एकावली परिणय' महाकाव्य (जे कि मैथिलीक पहिल प्रकाशित महाकाव्य अछि) मैथिली-साहित्यक एक एहन अमूल्य निधि थीक जे हिनका निस्सन्देह महाकवि सिद्ध कऽ दैत अछि। कविशेखरजी जाहि वस्तुक वर्णन प्रारम्भ करैत छलाह तकर सांगोपांग वर्णन कऽ दैत छलाह मुदा कतेक ठाम क्रमबद्धता नहि रहै पबैत छलनि जे दोष मानल जा सकैत छनि। जेना तेसर-सर्गमे कमल, कुमुदिनीक वर्णन कऽ देलाक बाद बीचेमे दोसर वस्तुक वर्णन अछि आ पुनः कमल, कुमुदिनीक वर्णन अछि एवं २२ म पदमे प्रातःकालक वर्णन अछि एवं लालिमाक हटि जयबाक वर्णन अछि मुदा २७म पदमे लालिमाक फेर वर्णन कयल गेल अछि। बातगोक हेतु दुनू पद द्रष्टव्य थीक —

विधि-रचक अरुणा-अम्बरक,
रवि-छार लगाए पखारल।
भए गेल स्वच्छ ओ लगले,
तें तेजि समस्त तिमिर-मल ॥[1]

एवं

हरि-केहरि शैल-शिखर चढ़ि,
संहारल वैरि तिमिर-करि।
तनि-रुधिर-धारसँ लोहित,
जनि-पूर्व-दिशा छल छन भरि ॥[2]

तें एहिठाम कविशेखरजीक दोष देखबामे अबैछ कारण केवल वर्णनक चमत्कारक प्रमुखता मानि समयक गतिकें ध्यान नहि राखल गेल अछि।

ओना एहि तरहें जखन सूक्ष्मदृष्टिसँ हुनक काव्यकें देखय लगैत छिऐनि तँ अनेको दोसर देखबामे आबि जाइत अछि। जेना निम्न पदमे सूर्यक डुबितहि घोर अन्धकारक वर्णन असंगत लगैछ। द्रष्टव्य थीक पद—

डूबितहिँ रविक विशालतम,
भेल तमक साम्राज्य।
धर्मक लोपहि हो यथा,
जग पाखण्डक राज्य ॥[3]

एतबे नहि, कतेको ठाम वर्णन अस्वाभाविक लगैत अछि जेना 'एकावली परिणय महाकाव्यमे एकावली वन्दनी बनल छथि मुदा यशोमती हुनक सौन्दर्य सविस्तर वर्णन कऽ एक वीरकें सुनबैत छथि एवं षष्ठ-सर्गमे कतहु भाग्यक प्रधानता देखबैत छथि तँ कतहु कर्मक महिमा। हिनक काव्यक अन्य दोष थीक प्रसाद गुणक अभाव। जँ कतहु अछियो तँ स्वल्पे मात्रामे ओहो अलंकारक भारसँ दुर्बोध अछि। तें संस्कृतक बिनु नीक ज्ञान रहने अर्थ लागल कठिन अछि धरि एहि सभ त्रुटिक अछैतो हिनक वैशिष्ट्य परिचय हिनक सन्ध्या, प्रभाव एवं वसन्त-वर्णनमे विशेष रूपसँ देखबा योग्य थीक। नव्य एवं भव्य कल्पनाक अपूर्व दृश्य हिनक उक्त महाकाव्य मे देखबा-योग्य थीक। एकावलीक आँखिक पपनीक विलक्षण वर्णन करैत कवि कहैत छथि जे एकावलीक अनिद्य सौन्दर्य देखि कामदेव अपन धनुष-बाण राखब निरर्थक बुझलथि तें ओकरा जे दू खंड कऽ फेकि देलनि सैह एकावलीक दुनू आँखिक पपनी भऽ गेल—

"रैम्यसुता-सौन्दर्य अनिर्वचनीय निरखितहिँ,
मदन धनुष रखबाक प्रयोजन मानल किछु नहि।
फेकल कए दुइ खण्ड विश्वकें जानि वशीकृत,
सैह भेल भ्रूयुग्म तनिक ध्रुव भाल-मूल-धृत ॥[4]

कविशेखरजी प्रकृति-प्रेमी कवि छलाह। हिनका हृदयमे प्रकृतिक प्रति अगाध प्रेम छलनि तें

प्रकृति-वर्णन विलक्षण ढंगें कयने छथि। प्रकृतिक तीनू रूप (१) उद्दीपक (२) शिक्षादायक एवं (३) शान्तिदायकक वर्णन कयने छथि। ऋतुराज बसन्तक आगमनमे प्रकृति लावण्यमयी सुषमाकें देखि अपन हृदयक अनुभूतिकें विलक्षण ढंगें व्यक्त कयलनि अछि—

"शिशिर दलित किसलयित कमलिनी भए बहु कोरक पाओल।
मधु-लोलुप मधुकर निकरल धुनि छल संगीत सुनाओल॥"[५]

एतबे नहि जखन वसन्त ऋतुमे कविक दृष्टि वन-उपवनमे फुलायल लाल-लाल समीरक फूलपर जाइत छनि तखन हिनका बूझि पड़ैत छनि जे वसन्त परिणय-कालमे अपन प्रेयसी वनलक्ष्मीकें लाल-रंगक नूआ घोघटमे प्रदान कयने छथि वैह एहन सुन्दर लगैत अछि—

"सीमर-लाल-फूल-कपटें जनु ऊपरसँ पाटक पट।
कान्त वसन्त देल परिणयमे वनलक्ष्मीकें घोघट॥"[६]

उपर्युक्त प्रकृति-वर्णनमे प्रकृतिक उद्दीपक रूप देखि पड़ैत अछि।

दोसर, प्रकृतिकें शिक्षा-दायक रूप केहन विलक्षण अछि से द्रष्टव्य थीक —

"स्वच्छो रवि रागी बनल, परसि प्रतीची अंग।
होथि विरक्तो को न जन, विषयी वनिता-संग॥"[७]

एहि ठाम सन्ध्या-कालक सूर्यकें नायक एवं प्रतीची (पश्चिम दिशा) कें एक विषयी वनिता (स्त्री) मानि प्रकृतिक मानवीकरण (Personification) विलक्षण ढंगें कयने छथि। एहि पदमे प्रकृतिक शिक्षादायक रूप देखबामे अबैत अछि। एतबे नहि, हिनक प्रकृति-वर्णन विभिन्न रूपमे देखबामे अबैछ। जेना (१) प्रकृतिक आलंकारिक चित्रण, (२) स्थानगत विशेषता एवं (३) मानवीकरण आ' स्वतन्त्र चित्रण। वसन्तक उन्मादकारी प्रभावक केहन विलक्षण-वर्णन कयने छथि से द्रष्टव्य थीक—

"मत्त-मधुप-धुनि सुनि वसन्त गुनि मानिनि मान समेटल।
केलि-तरल अलबेलि दयित-गल भुजयुग-बेलि लपेटल॥"[८]

वसन्त एवं शिशिरक तुलनात्मक परिचय करबैत कवि थोड़बहि शब्दमे अपन विलक्षण प्रतिभाक परिचय देल अछि—

"कतहु लवङ्गलता छल विकसल भ्रमर जालसँ लचकल।
माधवीक मृदु डारि कतहु पुनि कुसुम गुच्छसँ मचकल॥[९]
प्रिय यद्यपि शिशिरो छल युवतीक, सुरत-श्रमक परिहारें।
प्रियतम किन्तु वसन्त भेल नव केलि कला-विस्तारें॥"[१०]

(घ) कविक भाषा शैली :—

कविशेखरजी संस्कृतक प्रकाण्ड विद्वान् छलाह। भाषाक दृष्टिसँ ओ अद्वितीय छलाह। हिनक भाषा-शैली अत्यन्त प्रभावोत्पादक छनि। संस्कृत एवं मैथिली भाषापर असाधारण अधिकार रखबाक

कारणेँ ई संस्कृतनिष्ठ भाषाक प्रयोग करैत छथि। जेना संस्कृत बहुल भाषाक प्रयोगक एकटा उदाहरण द्रष्टव्य थीक—

"सरस ब्रततति-ततति-परस सुरभि-वश करइत विपिन प्रदक्षिण।
दक्षिण पवन विरह-हुतवह-हित पथिकक भेल अदक्षिण॥"[११]

तँ दोसर दिशि सरलसँ सरल भाषाक प्रयोग सेहो द्रष्टव्य थीक—

"अछि तीर्थ-राज लग अति विचित्र,
तमसा-यमुना-सङ्गम पवित्र।
दर्शनहुँ हरए जे त्रिविध-ताप,
प्राणीक दूरि कए सकल पाप॥"[१२]

ओना ई बात एकदम सत्य जे एहिमे संस्कृत बहुल भाषाक प्रयोग अधिक कयल गेल अछि ताहूमे अलंकारक झंकार तँ एतेक अछि जे कोनो अलंकारक उदाहरण तकबाक हेतु प्रायः एहि महाकाव्यसँ बाहर जयबाक प्रयोजन नहिये जकाँ पड़ैत अछि। जेना बानगीक हेतु एक-दू टा आलङ्कारिक पदक उदाहरण द्रष्टव्य थीक—

"विरहीक विपक्षो पक्षी, कोकिल रक्ताक्षो अकुपित,
आदेश रतीश नरेशक, सुनबैत कएल दुख अपित॥"[१३]

एतय विरोधाभास अलंकार भेल।

"भए तीव्र तरुण-तरणि-प्रताप,
कए सगर चराचर विश्व-ताप।
उपजाओल सभकेँ मन विराग,
अत्याचारेँ नहि जाग राग॥"[१४]

एहिठाम अर्थान्तरन्यास अलंकार भेल।

एतबहि नहि, नव-नव छन्दक प्रयोग कय अपन सूक्ष्म छन्दोज्ञानक सेहो परिचय देलनि अछि।

एकरा एक-दू टा उदाहरण द्वारा स्पष्ट कऽ रहल छी। जेना संस्कृतक प्राचीन आचार्य लोकनि सोरठा छन्दमे 'प्रथम एवं तृतीय चरणक अन्तमे तुक' मिलब आवश्यक मानलनि अछि, मुदा एहि महाकाव्य मध्य सोरठा छन्दक एक नबे प्रयोग कयलनि अछि। एहिमे प्रथम ओ तृतीय चरणमे तँ तुक मिलल छैके एवं द्वितीय एवं चतुर्थ चरणमे सेहो तुक मिलैत छैक। जेना—

"जे नृप बान्हथि गेंठ, धन उचितो नहि करथि व्यय।
सएह कहाबथि ठेंठ, दानयशोगानक समय॥"[१५]

एकर अतिरिक्त हिनक शब्द चयन सेहो उच्च कोटिक होइत छलनि। प्रायः प्रत्येक शब्दक प्रयोग करबासँ पूर्व खूब सोचि-विचारि लैत छलाह। तेँ हिनक कलममेँ जे शब्द बहरायल अछि से पूर्णतः नापल-तौलल बुझाइत अछि। उदाहरणार्थ निम्न पद द्रष्टव्य थीक —

जत निग्रह मानसमे यमीक,
मालिन्य कलेवरमे तमीक।
व्याकरणहिँ विग्रह-सन्धि-काज,
कवितहिमे दुर्घट-बन्ध राज।।'[१६]

उपसंहार—महाकविकेँ युगक प्रतिनिधि मानल जाइत अछि, मुदा से प्रतिनिधित्व हिनक काव्य नहि कऽ सकल अछि जेना हिनक काव्यमे अर्वाचीन शैलीक निवेश सेहो नहि भऽ प्राचीने शैलीक अनुसरण कयल गेल अछि इत्यादि दोषक अछैतो हिनक काव्यक वैशिष्ट्य तेहन अद्वितीय अछि जे जावत धरि मिथिलाक आर्य सस्कृति वर्त्तमान रहत एवं जावत धरि मैथिली भाषामे सजीवता रहत तावत धरि हिनक काव्यक सौरभ सेहो वातावरणकेँ आमोदित करैत रहत।

प्रसङ्ग-निर्देश

१. एकवाली परिणय, तृतीय-सर्ग, २२म पद।
२. ,, ,, ,, ,, २७म पद।
३. ,, ,, द्वितीय-सर्ग, १०म पद।
४. ,, ,, अष्टम-सर्ग, ६३म पद।
५. ,, ,, सप्तम सर्ग, २४म पद।
६. ,, ,, ,, ,, ४२म पद।
७. ,, ,, द्वितीय सर्ग, ५म पद।
८. ,, ,, सप्तम सर्ग, ६४म पद।
९. ,, ,, ,, ,, ६८म पद।
१०. ,, ,, ,, ,, ७०म पद।
११. ,, ,, ,, ,, १०म पद।
१२. ,, ,, प्रथम-सर्ग, १३म पद।
१३. ,, ,, तृतीय सर्ग, २०म पद।
१४. ,, ,, पञ्चदश-सर्ग, ७९म पद।
१५. ,, ,, षष्ठ-सर्ग, ५०म पद।
१६. ,, ,, प्रथम-सर्ग, १६म पद।

डॉ० वीरेन्द्र झा